683. 12 (*on* x. 3. 3); मांसमनसोः पुरीषाणीयस्त्वेन VedāntSā.(Rā.) 233. 4 (*on* ii. 4. 18)

अणीव (aṇī-va) *m.* [*śubhrādigaṇa*, P. iv. 1. 123; GaṇPā. 230. 38; GaṇRa. 3. 219 (262)] name of a person शुभ्र इत्येवमादिभ्यः ··· ढक् प्रत्ययो भवति···अणीव KāśiVṛ, *on* P. iv. 1. 123.

अणु (áṇu) *adj.* [*f.* –ṇvī] [Mayr. 1. 26; Debru. p. 413; GaṇPā. 147. 30 (*pṛthvādi* v. 1. 122); 186. 11 (*yāvādi.* v. 4. 29); KāśiVṛ. (*on* P. .v. 4. 29); JaineVyā. iv. 2. 35; CāndraVyā. iv. 3. 27; iv. 4. 12; SaraKaṇṭhā.(Gr.) v. 4. 18; SiddhaHe. vii. 3. 23; GaṇRa. 3. 182 (221); 3. 188 (231); 7. 392 (416)] **Ai** minute, of atomic size, insignificant **ii** thin, slim **Bi** small, little, slight (abstract things) **ii** subtle (metaphysical entity) **Ai** minute, of atomic size, insignificant अति ··· गव्या जिगात्यण्व्या ṚV. ix. 14. 6; एष धिया यात्यण्व्या ṚV. ix. 15. 1; तमंमृक्षन्त ··· विप्रासो अण्व्या ṚV. ix. 26. 1; ओतं निर्हितमुच्छिष्टे यज्ञस्याणूनि विद्यया AV. xi. 7. 10; तस्मादाभिरण्वीभिः सतीभिर्गुरुं भारं हरति GopBr. i. 5. 3; तद्यथा सहस्रधा केशो विपाटितस्तावदण्व्यः पिङ्गलस्याणिम्न्यस्तिष्ठन्ति शुक्लस्य कृष्णस्य S'āṅkhāĀ. 25. 14 (6. 19); अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा TaiĀ. 800. 4 (x. 10. 1); KāṭhU. 2. 20; S'vetāU. 3. 20; अण्व्य इवेमा धाना भगव इति ChāndoU. vi. 12. 1; यदणुभ्योऽणु···तदेतदक्षरं ब्रह्म MuṇḍaU. ii. 2. 2; मूले छेदयित्वा प्राङ् वोदङ् वा तिष्ठन्नुत्पाट्य यद्यणुरुदुम्बरः स्यात् S'āṅkhāS'S. xvii. 1. 8; अणुरनु स्थवीयांसम् Nir. 124. 5 (6. 22); कृशास इत्यणवस्तत्र यान्ति BaudhDS. i. 5. 86; अणोर्महतश्चोपलब्ध्यनुपलब्धी VaiśeSū. vii. 1. 8; vii. 1. 10; यद् गृहीतं फलं राज्ञा तत्र कृमिरभूदणुः MahāBhā. i. 39. 29; i. 26. 19; तारारूपाणि यानीह दृश्यन्ते द्युतिमन्ति वै। दीपवद्विप्रकृष्टत्वादणूनि सुमहान्त्यपि MahāBhā. iii. 43. 30; iii. 163. 28; अणोरणीयान्सुमनाः सर्वभूतेषु जागृमि MahāBhā. v. 45. 28; कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः BhagGī. 8. 9; अणुर्बृहत्पुनः स्थूलो नादान्मुञ्चन्निवाम्बुदः MahāBhā. vii. 561*; रूपं च बहुधा स्मृतम् ··· अणु वृत्तवान् MahāBhā. xii. 177. 32; सर्वो महान्हेतुरणोर्वधाय Saund. 10. 45; 16. 72; न कन्यायाः पिता विद्वान् गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि ManuSm. 3. 51; स्थूलाणुस्रोतसां भेत्ता CaraS. i. 12. 8; iii. 7. 10; vi. 14. 7; HārīS. iii. 5. 10; स सकृद्भवति स्थूलः पुनर्भवति चाप्यणुः BhelaS. 54. 14 (2. 3); 216. 10 (6. 30); अणुभ्यस्तैलद्रव्येभ्यो निष्पाद्यते इत्यणुतैलम् SuśruS. iv. 4. 28; iv. 35. 32; vi. 24. 13; मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः सर्वोऽप्ययं नन्वणु (v. l. °णुः) S'atTrayī. 304; गृहीतं क्षेत्रिणो धान्यं निवेदयसि वाण्वपि BṛParāSm. 5. 163; (चन्द्रमाः) अमावास्याष्टमेंऽशे च पुनः किल भवेदणु(?:) GobhiSm. 2. 84; परिमाणं मानव्यवहारकारणम्। तच्चतुर्विधम्। अणु महद्दीर्घं ह्रस्वं चेति PadārthaSaṁ. 130. 21; TarkBhā.(Ke.) 69. 5; अधिष्ठितः स विभुना ··· अणीयांसमणोर्विद्धि JayāS. 6. 209; कुर्यादणुश्च पुररोधमगस्त्यनामा BṛSaṁ. 12. 19; 17. 9; मेरोरिवाणुर्यस्यैतद्यन्मयं च द्विजोत्तम ViṣṇuP. vi. 8. 26; v. 7. 51; अणोरणुतरे देवि महतोऽपि महीयसि BrahmāṇḍP. vi. 6. 7; अलंकृतं केसररेणुनाणुना Kirātā. 4. 7; 6. 40; अणोर्भावोऽणिमा S'āṁkhyaKāBh. 16. 26 (*on* 23); अंशादूनेऽपसव्याख्यं युद्धमेकोऽत्र चेदणुः SūrySi. 7. 19; यथाणुरग्निस्तृणगोमयाद्यैः संधुक्ष्यमाणो भवति क्रमेण। महान् स्थिरः AṣṭāSaṁ. i. 141. 1 (1. 27); नवमः शूकिषु दशमः स्थूलेष्वेकादशो भवत्यणुषु BrāhmSphuSi. 12. 50; यतः क्षितेरवयवसंपदोऽणवस्त्विषां निधेरपि वपुरावरीषत S'iśuVa. 17. 59; पृथ्वीरेणुरणुः पयांसि कणिकाः ··· ··· दृष्टे यत्र स तावको विजयते भूमावधूतावधिः MukuMā. 1; S'ākaṭāVyā. iii. 4. 115; अणोरणीयानणुः MahāP. 25. 176; तदिति चतुर्धा विषमं यत्राण्वपि नैव गुर्वपि च कार्यात् Kāvyālaṅ.(Ru.) 7. 51; पतन्त्यमूर्ग्रहततयो दिवाकरप्रभाहता दिशि दिशि वासरेऽणवः HarVi. 29. 51; शुक्लं कृष्णमणु स्थूलमिति धीः कर्मणो वशात् BṛĀraUBhVā. i. 5. 119; ज्ञानं ह्यज्ञानमेव निवर्तयितुं क्षमते न तु वस्त्वण्वपि IṣṭaSi. 94. 2; एकोद्यमं जरति यूनि महत्यणौ च···अयं यतते कृतान्तः YaśasCam. i. 256. 7; कन्यायां ये प्रयच्छन्ति दानमण्वपि भारत PadmP. i. 38. 53; अणु धनमपि न त्याज्यम् KalāVi. 2. 79; सुसूक्ष्मम् ··· तदणोरणु ĪśānS'iPa. i. 1. 26; अनणुषु दशमांशोऽणुष्वथैकादशांशः परिधिनवमभागः शूकधान्येषु वेधः Līlā. 233; अणुर्नागो महानागः ··· ये चापि धरणीधराः Hastyāyur. 711. 25 (4. 36); यादृगाश्रयेऽणुमहदादिपरिमाणसमवायः परेणाङ्गीक्रियते TattvPradī.(Ci.) 317. 13; ध्वान्तक्रान्तदृशो न यत्र पततः पश्यन्ति जन्तूनणून् MohaRāPa. 1. 12; अमावास्याष्टमांशान्ते (चन्द्रः) चाणुर्भूत्वा पुनर्जायते CaturCin. iii(1). 176. 14; स्थूलं चाणु महत्तथा ··· आच्छाद्य जलपूरो व्यजृम्भत RājTa.(Jo.) 1220; अणुरपि मणिः प्राणत्राणक्षमो विषभक्षिणाम् Subhāṣi. 325; अणोरल्पशरीरावच्छिन्नस्य जन्तोः S'ivārkaMaDī. i. 182. 24 (i. 1. 4); महान्तोऽप्यणवो राजन्नणवश्च महत्तराः RasGaṅ. 572. 7; TrikāS'e. iii. 3. 120; NānārthāSaṁ. i. 47. 56; **A ii** thin, slim पूर्वार्धाच्च यजमानभागमणुमिव दीर्घम् ĀpaS'S. iii. 1. 9; ह्रस्वः शीघ्रः कृशश्चाणुः ··· स वातप्रकृतिर्नरः BhelaS. 72. 12 (3. 4); अणुनावेष्ट्य पट्टेन SuśruS. iv. 3. 24; धीरागच्छदुमे···अणुरविकिरणा तेजःसु भव Kāvyālaṅ.(Ru.) 4. 15; अणु°···°सिंहादिभिः समः। मुष्टिग्राह्यो भवेन्मध्यः AlaṅkāS'e. 13. 12; न्यायप्राप्तसर्वहोमस्यैवाण्व्या धारया करणे MayūMāli. 286. 16 (*on* iii. 5. 6); अस्याः किल मध्यभागः। अणुः परं योगिदृशानुलक्ष्यः PadyaVe. 209; **Bi** small, little, slight (abstract things) अणुभिश्च महद्भिश्च। समारूढः प्रदृश्यते। संवत्सरः प्रत्यक्षेण TaiĀ. i. 2. 3 (12. 1); i. 12. 2 (100. 2); स नाणु साम्नोऽन्विच्छतीति JaimiUBr. iii. 10. 3; अनुस्वारेऽण्विति (आनुनासिक्यम्) भारद्वाजः TaiPrāti. 17. 3; न क्षुधाभयमण्वपि MahāBhā. i. 62. 8; अणुरप्यपचारश्च नास्त्यस्माकं नराशन MahāBhā. iii. 154. 12; निवर्तनाद्धि सर्वतो न वेत्ति दुःखमण्वपि MahāBhā. v. 36. 14; नोवाचाप्रियमण्वपि MahāBhā. vi. 94. 1; न च कायेन कृतवान् स पापं परमण्वपि MahāBhā. xii. 322. 25; न हि मे वृजिनं किंचिद्विद्यते ब्राह्मणेष्विह। अणु वा यदि वा स्थूलं विदितं साधुकर्मभिः MahāBhā. xiii. 8. 15; न स किंचिन्महासत्त्वः कृतवान् पापमण्वपि Rāmā. ii. 1712*(2); आस्वादः स किमेतेषां करोति सुखमण्वपि BuddhaC. 14. 8; सस्मार कृतमण्वपि Saund. 2. 9; 9. 41; 17. 36; अणुर्हि प्रथमं भूत्वा रोगः CaraS. i. 11. 58; सर्वमपि तु खल्वेतद्गुणोपादानमणुना कालेन भवति CaraS. iv. 4. 8; अणुः शब्दोऽल्पो मन्द इत्येतस्य ग्रहणम् NyāyBh. 104. 2 (*on* ii. 1. 37); ततस्तं भगवानाह न तेऽस्तु भयमण्वपि ViṣṇuP. v. 37. 72; त्वदणु प्रियमाश्रयामहे JānaHa. 4. 26; अणुरप्युपहन्ति विग्रहः Kirātā. 2. 51; नापि कौस्तुभमणिरणुनापि गुणलवेन शेषमतिशेते Kād. 203. 22; पूष्णोर्य(? य)स्य करैरुग्रैस्तापोऽणुरपि नो कृतः PadmP.(Ra.) 26. 42; बुद्ध्यादेरपि न स्वतोऽस्त्यणुरपि स्फूर्तिः SarvaVeSāSaṁ. 619; पश्यति। आत्मत्वेन यदा सर्वं नेतरस्तत्र चाण्वपि AparoAnu. 53; अणुरपि च धूमः S'ivāL. 6; संभाव्यते नास्मात्प्रार्थनाफलमण्वपि BṛKathāS'loSaṁ. 23. 14; श्रुत्वाहृष्यत्तत्र चाणूरपीडाः प्राक्कर्तासौ दृप्तचाणूरपीडाः HarVi. 46. 58; विस्मृत्याप्यनृतं नित्यं न च वक्तव्यमण्वपि TaiUBhāVā. 37. 1 (1); 45. 1 (1); फलमण्वपि संभाव्यं ज्ञानस्याकारकत्वतः BṛĀraUBhVā. i. 4. 126; इत्यतोऽरावणो रोषसिद्धेस्ताम्यन्निवात्मनि। बहुधा मागधेयोऽसौ वीरैश्चक्री रणं ययौ RāghPāṇ.(Dha.) 18. 9 (comm. अतोऽस्या रोषसिद्धेः क। अरौ शत्रौ। कथंभूताया रोषसिद्धेः। अणोः लवोः); उदीक्ष्यते रन्ध्रमिहैव नाण्वपि RāmC. 4. 60; अनवयवद्रव्यं द्वेधा व्यापकमणु च TātpaṬ.(Vā.) 218. 3 (*on* i. 1. 10); तस्याश्चिन्ता न कर्तव्या त्वया अणुरपि प्रभो SkandP. i(1). 5. 135; पुण्यक्षेत्रे निवासे हि पापमण्वपि नाचरेत् S'ivaP. i. 12. 7 (10B. 9); न च कालभयं तत्र न चान्यद्भयमण्वपि GaṇeP. ii. 92. 22; ĀdiP. 17. 30; राजा वा कैकेयी वापि नात्र कारणमण्वपि- AdhyāRā. ii. 5. 24; कार्यमण्वपि काले तु कृतमेत्युपकारताम् YogVā. i. 7. 26; अर्थापेक्षया अणोः लघोः···सूत्रस्य SthānṬ. 3B. 12; पृथुरित्थमथाणुरस्तु सा (उपक्रिया) न विशेषे विदुषामिह ग्रहः NaiṣC. 2. 14; न ते पुनः। दोषोऽणुरपि PrabhāC. 129. 14; अणुनापि प्रविश्यारिश्छिद्रेण SūktiRa. 156. 33; न निरुद्धमण्वपि मुनेर्वचसि S'aṅkaDigVi.(Mā.) 9. 14; संवत्सरादणवोऽयनादयः S'aṅkaVi.(Ā.) 215. 1; वैगुण्यमण्वपि सरोजदृशो यदि स्यात् BhartṛNi. 2. 12; अणु पूर्वं बृहत् पश्चाद्भवत्यार्येषु संगतम् Subhāṣi. 2710; तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः Mahimna. 27; अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नरः SāṁkhyaPraBh. 112. 17 (*on* 4. 13); तदणुमपि विलम्बं न क्षमन्तेऽसवोऽस्य KaṁVa. 2. 24; अन्योपचारविधिरस्तु महानणुर्वा YātrāPra. 6. 111; न कपोत भवन्तमण्वपि स्पृशतु श्येनसमुद्भवं भयम् RasGaṅ. 48. 9; कालस्त्वतीतादिव्यवहारहेतुरणुश्च GoviBh. 134. 2 (*on* ii. 2. 33); Vaija. 212. 136; AbhidhāCin. 1426; AnekāSaṁ. 2. 131; **B ii**; subtle (metaphysical entity) अणुः पन्था विततः पुराणो मांस्पृष्टः S'atBr. XIV. vii. 2. 11; BṛĀraU. iv. 4. 8; अणुरेष धर्मः KaṭhU. 1. 21; 2. 13; यदणुभ्योऽणु MuṇḍU. ii. 2. 2; अण्व्यो मात्रा विनाशिन्यो दशार्धानां तु याः स्मृताः ManuSm. 1. 27; तदभावादणु मनः VaiśeSū. vii. 1. 23; स हि भगवान् (वायुः)···भावानामणुर्विभुर्विष्णुः CaraS. i. 12. 8; प्राणाद्या वायवः स्थूलाः संकल्पाद्यास्तथाणवः BṛParāSm. 12. 75 (254. 5); तद् ब्रह्म ··· नैव चाप्यणु AhirbuSaṁ. 2. 49; 14. 20; अण्वनन्तमपारवत् ViṣṇuP. i. 14. 24; योऽतीन्द्रियः परो व्यक्तादणुर्ज्यायान्सनातनः MatsyaP. 2. 27; अणुः शरीरमात्रो वा सर्वथापि न युज्यते TantrVā. 378 19 (*on* ii. 1. 5); न च सतोऽणुरवयवः ··· जीवाख्यः ChāndoUBh. 295. 18 (*on* v. 10. 2); अक्षरं यदि न स्थूलमणु तर्हि तदिष्यताम् BṛĀraUBhVā. iii. 8. 71; अणुर्भवति रूपेण पुरुषः ParaS. 30. 84; अणु ··· तन्मनः LakṣmīT. 43. 97; स पुनरयमात्मा अणुः शरीरपरिमाणो विभुर्वेति चिन्तनीयम् S'āstrDī. 124. 15 (*on* i. 1. 5); उत्क्रान्तिगत्यागतीनां श्रुतेरणुर्जीवः VedāntSā.(Rā.) 203. 4 (*on* ii. 3. 20); ते चाणवोऽनन्ता नित्याः NītiMā. 31. 17; आत्मा। हेतूनां सकाशादणुरेव BrahmSūBh.(Ma.) 35A. 11 (*on* ii. 3. 20); अणुसंयोगिमनः TarkBhā.(Ke.) 66. 13; अणुं हि जीवं पतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः SiddhāRa. 1(3. 17); 'सर्वे ···' इत्युत्क्रान्तिश्रुतेः प्राणा अणवः VedāntPāSau. 244. 6 (*on* ii. 4. 7); अणुरवगतिमान् जीवः TattvMu. 1. 7; अणुर्महान्मध्यमो वेत्येवं तत्रापि वादिनः। बहुधा विवदन्ते हि श्रुतियुक्तिसमाश्रयात् PañcDa. 6. 78; तद्वयणोर्जीवस्यैव युक्तम् TattvPrakā. 47B. 7 (*on* i. 3. 14); सिध्यति अणु मनः Upask. 166. 11 (*on* iii. 2. 1); जीवो नाणुः प्रत्यक्षगुणाश्रयत्वात् Nyāyāmṛ. 610B. 3; हृदये प्रादेशो मूर्धनि च मनसीन्द्रियेषु चाणुः AṇuBh. 71. 2 (*on* i. 2. 28); जीवो बुद्ध्युपाधिकोऽणुः AdvaiSi. 754. 4; एतानीन्द्रियाण्यणूनि YatīndraMaDī. 39. 6(4); प्राणा व्यापिनोऽणवो वा इति संशये GoviBh.